I J A M S R

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन का अध्ययन

शोधार्थी – शिवेन्द्र प्रताप सिंह
शिक्षा संकाय, साईं नाथ विश्वविद्यालय, रांची

डॉ0 योगेन्द्र नाथ तिवारी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर
शिक्षा संकाय, साईं नाथ विश्वविद्यालय, रांची

सारांष – प्रस्तुत षोधपत्र में षिक्षा को औपचारिक, अनौपचारिक एवं निरौपचारिक साधन के रूप में बताया गया हैं क्योंकि मनुष्य के जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक यह प्रक्रिया चलती रहती है। औपचारिक शिक्षा में शिक्षक का स्थान मुख्य होता है। शिक्षक के द्वारा ही शिक्षा का विकास सही दिशा में होता है। शिक्षक की भूमिका समाज में समय–समय पर बदलती रहती है, लेकिन एक शिक्षक की समाज में जो स्थिति होनी चाहिए वही रहती है, उसमें किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं होता है। शिक्षक के द्वारा ही एक सफल शिक्षण कार्यक्रम पूरा किया जा सकता है।

एक षिक्षक को लक्ष्य प्राप्ति के लिए परिस्थितियों को अनुकूल बनाना या परिस्थितियों के अनुकूल होना पड़ता है। यह अनुकूलन व्यक्ति अपनी क्षमता एवं योग्यता के अनुसार करता है।

जिस प्रकार विधाओं में वेद विद्या, मंत्रों में प्रणय मंत्र, वृक्षों में कल्प वृक्ष, प्रिय वस्तुओं में प्राण, नदियों में गंगा, धातुओं में स्वर्ण की जितनी महत्ता होती है, उतनी राष्ट्र में षिक्षक की होती है। यदि हमें समस्त विश्व को श्रेष्ठ बनाने का संकल्प पूरा करना है तो सम्पूर्ण भारत वर्ष के प्रत्येक नागरिक को शिक्षित करना होगा और यह लक्ष्य या संकल्प पूरा केवल षिक्षकों के द्वारा ही हो सकता है। यह तभी सम्भव है, जब षिक्षक अपने कार्य क्षेत्र से सही रूप में समायोजन कर ले।

प्रस्तावना

एक शिक्षक का राष्ट्र के विकास में पूर्ण योगदान होता है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण एवं समन्वित विकास करना होता है। समय, काल एवं परिस्थितियों के अनुसार शिक्षा के मूल्यों का निर्धारण किया गया है। शिक्षा के द्वारा ही समाज में बदलाव लाया जा सकता है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो सतत् रूप से चलती रहती है, जैसे – औपचारिक, अनौपचारिक एवं निरौपचारिक ये शिक्षा के प्रमुख साधन हैं। औपचारिक शिक्षा में शिक्षक का स्थान मुख्य होता है। शिक्षक के द्वारा ही शिक्षा का विकास सही दिशा में होता है। शिक्षक की भूमिका समाज में समय–समय पर बदलती रहती है, लेकिन एक शिक्षक की समाज में जो स्थिति होनी चाहिए वही रहती है, उसमें किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं होता है। शिक्षक के द्वारा ही एक सफल शिक्षण कार्यक्रम पूरा किया जा सकता है।

I J A M S R
International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

शिक्षा का जीवन में महत्व –

शिक्षा प्रकाश का वह स्रोत है, जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा पथ–प्रदर्शन करती है।

"भृर्तहरि" ने नीतिशतक में लिखा है – विद्याहीन मनुष्य पशु के समान होता है। की महत्वता का वर्णन हमारे शास्त्रों में भी है, शिक्षा की महत्वता को बताते हुये हमारे शास्त्रों में दिया है :– शिक्षा

"किम–किम न साधयति कल्पलतेव विद्या"।

जिसका अर्थ है कि जिस तरह कल्पलता सभी कुछ प्रदान कर सकने का गुण रखती है, उसी प्रकार विद्या से कुछ भी प्राप्त करने की योग्यता प्राप्त की जा सकती है। हमारे देश के शासकों ने भी विद्या की महत्वता का वर्णन किया है। सम्राट अकबर जो कि स्वयं पढ़ा लिखा नही था, ने विद्या की महत्वता को स्पष्ट करते हुये "आइने अकबरी" में वर्णन किया है कि जब मैं सबको समान शिक्षा, समान भोजन व समान कार्य दे सकूंगा तभी एक अच्छा शासक कहलाने के योग्य बनूंगा। समय–समय पर विभिन्न विद्वानों ने शिक्षा की आवष्यकता को स्पष्ट करते हुये लिखा है :–

पेस्टालॉजी – "मनुष्य की आंतरिक शक्तियों का स्वाभावित संतुलित व गत्यात्मक विकास ही शिक्षा है।"

टी रेमण्ट – "शिक्षा विकास का वह क्रम है, जिससे व्यक्ति के शैशव से प्रौढ़ता तक की प्रक्रिया निहित है, जिसके द्वारा वह अपने को भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल बनाता है।"

रूसो – प्रत्येक व्यक्ति को वातावरण से स्वतः शिक्षा लेने का अधिकार प्राप्त होता है।

लॉक – पौधों का विकास कृषि द्वारा और मनुष्यों का विकास शिक्षा द्वारा होता है।

एडीसन – संगमरमर के पत्थर के लिये जो महत्व मूर्तिकार का है, वही महत्व आत्मा के लिये शिक्षा का है।

उपरोक्त कथनों से स्पष्ट है कि समस्त क्रिया कलाप जो विभिन्न जीवन कार्यों के सम्पादन के लिये आवश्यक एवं उपयोगी ज्ञान कौषल तथा नैतिक सामाजिक मूल्यों के बोध और विकास से सम्बन्धित हैं, मिलकर शिक्षा कहलाते है। किसी भी राष्ट्र के निर्माण में उसके नागरिकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि नागरिक सुशिक्षित होंगे तो ही एक सुदृढ़ राष्ट्र की कल्पना सम्भव है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य को इस योग्य बनाया जा सकता है कि वह एक सभ्य समाज की स्थापना करें। शिक्षा उस दीपक के समान होती है, जो अपने प्रकाश से अधिकार रूपी अज्ञानता को दूर कर देती है। शिक्षा के अभाव में मनुष्य का जीवन अत्यन्त दुष्कर होता है।

शिक्षा की महत्ता को समझते हुये शिक्षा प्रदान करने वाले गुरू को हमारी संस्कृति में ईश्वर का प्रतिरूप माना गया है। इसी कारण गुरू की महत्वता को वर्णित करते हुये कहा गया है कि –

Vol 9, Issue 7, 2026 **Impact Factor: 8.535** DOI: https://doi.org/10.31426/ijamsr.2026.9.7.9518

I J A M S R

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

गुरूः ब्रह्मा गुरूः विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः।

गुरू साक्षात् परब्रह्म तस्मैं श्री गुरूवे नमः।।

समायोजन की संकल्पना –

उद्देष्य की प्राप्ति के लिए परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाना या फिर परिस्थितियों के अनुकूल अपने आपको बना लेना ही समायोजन कहलाता है। यह समायोजन व्यक्ति अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार करता है। समायोजन एक समाज को संगठित करने वाली महत्वपूर्ण प्रक्रिया है।

पार्क तथा बर्गेस – ''समायोजन संघर्ष का स्वाभाविक परिणाम है। समायोजन में विरोधी तत्वों का प्रभाव कुछ समय के लिए नियंत्रित हो जाता है लेकिन आन्तरिक रूप से इसकी सम्भावना सदैव बनी रहती है।''

समायोजन एक 'विरोधपूर्ण' सहयोग है। व्यक्ति कभी इसे अपने ह्रदय से स्वीकार नहीं करता, यद्यपि बाह्य रूप से वह अपने व्यवहारों में कुछ परिवर्तन अवश्य कर लेता है।

रयूटर तथा हार्ट – ''एक प्रक्रिया के रूप में समायोजन का तात्पर्य ऐसे प्रयत्नों से है जिनके द्वारा व्यक्ति स्वयं ही अपनी आदतों और मनोवृत्तियों का नये सिरे से निर्माण करके बदलती हुई दशाओं से सामंजस्य स्थापित करता है।''

गिलिन और गिलिन – ''समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति तथा समूह एक सहयोगपूर्ण एकता स्थापित करने के लिए अपनी विरोध पूर्ण क्रियाओं का उससे अभियोजन कर लेते है।''

बोरिंग, लैंगफेल्ड व वेल्ड –''समायोजन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में सन्तुलन रखता है।''

गेट्स व अन्य – ''समायोजन एक निरन्तर चलते रहने वाली प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति स्वयं के और वातावरण के मध्य सतुंलित संबंध बनाये रखने के लिए स्वयं के व्यवहार में परिवर्तन करता है।''

समायोजन निरन्तर चलते रहने वाली प्रक्रिया है और साथ ही व्यक्ति परिस्थिति तथा पर्यावरण के मध्य अपने को समायोजित करने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। अतः समायोजन को सन्तुलित दशा कहा गया है।

व्यक्ति के जीवन में सामाजिक प्रक्रिया का अत्यधिक महत्व है, क्योंकि जीवन को विभिन्न परिस्थितियों में सतुंलन बनाये रखने के लिए एवं जीवन को सफल व सुखमय बनाये रखने के लिए समायोजन स्थापित करना आवश्यक है। व्यापक अर्थों में व्यक्ति के आजीवन समायोजन के लिए प्रयास करना पड़ता है। व्यक्ति के व्यापक जीवन में अपने समस्यायें उत्पन्न होती रहती है। जो हमें तनाव या उलझन में डाल देती है। इसे मुक्ति प्रदान करने अथवा हल करने के लिए कुछ

IJAMSR

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

प्रयास करना पड़ता है। इस विषम परिस्थिति अथवा समस्याओं के रहने पर भी लक्ष्य को अपने अनुरूप प्राप्त करना समायोजन है। इसमें व्यक्ति या तो परिस्थितियों के अनुकूल बना ले अथवा स्वयं को परिस्थितियों के अनुकूल बना ले यह अनुकूलन नहीं समायोजन है।

समायोजन का अर्थ –

यदि व्यक्ति की आवश्यकता तथा आवश्यकता की पूर्ति करने वाले लक्ष्य के बीच बाधा उत्पन्न होती है तो समायोजन स्थापित करने की प्रक्रिया प्रारम्भ करनी पड़ती है। बाधाओं के कारण व्यक्ति में तनाव पैदा हो जाता है और साम्यावस्था विघटित होती है। यदि व्यक्ति बाधाओं को दूर कर लेता है तो उनका व्यवहार सुसमायोजित अन्यथा कुसमायोजित भी हो सकता है। इससे स्पष्ट है कि तात्कालिक परिस्थिति में लक्ष्य प्राप्त करने के मार्ग में उपस्थित बाधाओं को दूर करने में सफलता प्राप्त करना या किसी अन्य विकल्प को चुनकर संतुष्टि का अनुभव करना ही समायोजन स्थापित करना है।

बोरिंग, लैंगफील्ड और बेल्ड के अनुसार – ''समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य स्वयं की आवश्यकताओं एवं उसकी पूर्ति को प्रभावित करने वाली दषाओं में संतुलन बनाये रखता है।''

गेट्स एवं अन्य के अनुसार– ''समायोजन निरंतर चलती रहने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य स्वयं के और अपने वातावरण के मध्य एक संतुलित संबंध बनाये रखने के लिए स्वयं के व्यवहार में परिवर्तन करता है।''

इस प्रकार समायोजन एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति परिस्थितियों एवं पर्यावरण के मध्य अपने आपको समायोजित करने के लिए स्वयं के व्यवहार में परिवर्तन करता है।

इस प्रकार समायोजन को एक संतुलित दशा कहा गया है। जीवन में समायोजन की समस्यायें आती रहती है और उनका समाधान प्राप्त करने की अवधि में धैर्य तथा सहिष्णुता बनाये रखना चाहिए। ऐसा न करने से व्यवहार पर निराशा का दबाव बढ़ सकता है और व्यवहार असामान्य लक्षणा दिखायी पड़ सकते है। इससे जीवन में अस्त–व्यस्तता आ सकती है।

समायोजन के लक्षण – समायोजन करने वाले व्यक्ति में निम्नलिखित लक्षण पाये जाते हैं –

- परिस्थितियों का ज्ञान नियंत्रण तथा अनुकूल आचरण
- संतुलन
- पर्यावरण तथा परिस्थिति से लाभ उठाना
- समाज के अन्य व्यक्तियों का ध्यान
- संतुष्टि एव सुख
- सामाजिकता, आदर्श, चरित्र, संवेगात्मक, रूप से अस्थिर, संतुलित तथा दायित्वपूर्ण।
- साहसी एवं समस्या समाधान युक्त

गेट्स का कथन है कि – ''समायोजित व्यक्तित्व है जिसकी आवश्यकताएँ एवं व्यक्तित्व सामाजिक दृष्टिकोंण तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की स्वीकृति के साथ संगठित है।''

रूसो के अनुसार– विभिन्न परिस्थितियों में समुचित समायोजन बनाये रखने के निम्नांकित बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है :–

- परिस्थिति के विभिन्न तत्वों का मूल्यांकन तथा आवश्यकतानुसार उनमें परिवर्तन करना।
- समाधान प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत, योग्यता, सामाजिक कौशल एवं तार्किक क्षमता में विकास करना।
- स्वयं को अस्त–व्यस्त होने से बचाना।
- रचनात्मक तथा महत्वपूर्ण कार्यों में लगे रहना।
- स्वयं को हंसमुख तथा आकर्षक बनाये रखना।
- सामाजिक कार्यों तथा उत्तरदायित्वों में भाग लेना।
- किसी प्रयास के असफल होने पर और अधिक उपयुक्त प्रयास करना।
- अन्य व्यक्तियों या स्रोतों से सहायता लेना।
- द्वन्द्व की परिस्थिति में आकर्षण तथा विकर्षण के आधार पर लक्ष्य चयन करना या परित्याग करना।
- अपनी आवश्यकता तथा आकांक्षा को अपनी योग्यता के अनुरूप ही रखना तथा वांछित लक्ष्य न मिलने पर विकल्प से आवश्यकता की पूर्ति करना।

अध्ययन की आवश्यकता –

शोध का तात्पर्य किसी नवीन वस्तु या ज्ञान के नवीन सिद्धान्तों के आधार पर अन्वेषण करना है, जिसका उद्देश्य सरल एवं सुव्यवस्थित विधियों द्वारा किसी क्षेत्र की प्रमुख समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करना है। आज के प्रगतिशील समाज ने व्यक्ति को बहुत कुछ दिया है। इसके साथ ही साथ उसने समस्याओं को भी जन्म दिया है और उलझनें भी पैदा की हैं। आज प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्य के प्रति संतुष्ट नहीं है चाहे उसे जितनी भी अधिक सुविधायें क्यों न प्रदान की जा रही हों वह अपने कार्य की आलोचना ही करता है।

किसी भी समाज की उन्नति का प्रत्यक्ष संबंध शिक्षकों से होता है। समाज में शिक्षक एक ऐसा वर्ग है, जिसके द्वारा समाज को एक नयी दिशा मिलती है। इनके द्वारा समाज ही नहीं पूरा देश उन्नति की ओर अग्रसर होता है। आज समाज में सबसे दयनीय स्थिति शिक्षक की है क्योंकि वह सदैव स्वाभिमान, सम्मान और गौरव के साथ जीना चाहता है। उसने सदैव देना सीखा है, लेना नहीं। अतः शिक्षक त्रिदेव कहा जाता है, लेकिन उसे मिलने वाली सुविधायें नगण्य है। वह मानसिक रूप से अपने कार्यों से असंतुष्ट रहता है। शिक्षकों के असमायोजन एवं असन्तोष का मूल

I J A M S R
International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

कारण उनकी आकांक्षाओं का पूर्ण न होना। प्राथमिक शिक्षक अपने साधन, वातावरण एवं क्षमताओं की सीमा देखकर प्रगति के शीर्ष पर बढ़ने के लिए सोचने लगता है।

समस्या कथन –

''गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन का अध्ययन''

अध्ययन का उद्देश्य –

1. प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना ।
2. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

षोध परिकल्पना –

1. प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर है।

समस्या का परिसीमन –

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन लखनऊ जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों तक सीमित है।
2. प्रस्तुत शोध में लखनऊ जिले के 25 गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों को षामिल किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राथमिक स्तर पर कार्यरत 100 महिला शिक्षकों का ही चयन किया गया है।
4. प्रस्तुत शोध में महिला शिक्षकों के समायोजन के मापन के लिए डॉ0 एस0 के0 मंगल द्वारा निर्मित समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया।

सम्बन्धित साहित्य –

केवल मानव ही एक ऐसा प्राणी है, जो सदियों से एकत्र किये ज्ञान का लाभ उठा सकता है। मानव ज्ञान के तीन पक्ष होते है। ज्ञान या प्रज्ञा को संकलित करना, एक दूसरे तक पहुँचाना और ज्ञान में वृद्धि करना। यह तथ्य शोध में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। जो यथार्थता के समीप आने के लिए लगातार प्रयासरत रहता है।

I J A M S R
International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

Babu, R. (2004) studied on Higher Secondary Students Attitude towards the study of Commerce and their Adjustment. He concluded that, there is a significant relationship between attitude towards the study of commerce and their adjustment of higher secondary students.

Daye, P. and Kulshrestha, A.K. (2004) in their study on Personal, Professional and Social Adjustment of the Teachers working in Primary Schools of Agra District found that distribution of adjustment scores of the teachers was found to be normal in nature with slight divergence.

अनुसन्धान का अर्थ एवं परिभाषा

शब्दकोश के अनुसार है–''सावधानीपूर्वक की गई गवेषणा अथवा जाँच विशेषतया ज्ञान की किसी शाखा में नये तथ्यों की खोज द्वारा।''

अनुसन्धान में किसी समस्या का वैज्ञानिक ढंग से अन्वेषण सम्मिलित है। इसमें नवीन ज्ञान की खोज या समस्याओं के समाधान हेतु वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग किया जाता है।

रेडमेन इसी आधार पर कहते है – ''अनुसन्धान नवीन ज्ञान प्राप्त करने का एक व्यवस्थित प्रयास है।''

बेस्ट एवं काहन (1992) द्वारा प्रस्तावित शैक्षिक शोध तीन प्रमुख भागों में बॉटा गया है।

शैक्षिक शोध के प्रकार

1. **ऐतिहासिक शोध –** ऐतिहासिक शोध से तात्पर्य ऐसे शोध से होता है जिसमें बीती घटनाओं को रिकार्ड किया जाता है। ऐतिहासिक शोध मूलतः 'क्या था' (What was) का वर्णन करता है।
2. **विवरणात्मक शोध –** इस शोध में वर्तमान हालातों को रेकार्ड किया जाता है, उनका विश्लेषण एवं व्याख्या की जाती है। इस शोध में मूल रूप से 'क्या है' (What is) का वर्णन करता है।
3. **प्रयोगात्मक शोध –** प्रयोगात्मक शोध में कुछ चरों को नियंत्रित किया जाता है, कुछ चरों को परिचालित किया जाता है एवं दूसरे चर पर उसके पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। ऐसे शोधों में मूलतः इस बात का अध्ययन किया जाता है कि चरों को नियंत्रित करने एवं उनका परिचालन करने का प्रभाव क्या होगा।

शोध विधि – प्रयुक्त शोध उद्देश्यों की पूर्ति हेतु 'गैर प्रयोगात्मक या वर्णनात्मक सर्वेक्षण या मानवषास्त्रीय अध्ययन' विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध अभिकल्प – प्रस्तुत शोध का उद्देश्य लखनऊ जिले में स्थित प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन का अध्ययन करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु डॉ0 मंगल द्वारा निर्मित शिक्षक समायोजन विस्तृत सूची का प्रयोग किया गया है।

I J A M S R

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

जनसंख्या –शोध में जनसंख्या का अर्थ भिन्न होता है। जनसंख्या से तात्पर्य सम्पूर्ण इकाईयों के निरीक्षण से होता है। इसमें कुछ ईकाईयों का चयन करके न्यादर्ष बनाया जाता है। प्रस्तुत शोध में लखनऊ जिले के गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालय के समस्त महिला शिक्षकों को जनसंख्या के रूप में परिभाषित किया गया है।

न्यादर्श – प्रस्तुत शोध हेतु संबंधित जनसंख्या के अन्तर्गत लखनऊ जिले में स्थित गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत समस्त विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों के आंकड़े एकत्र करना मुश्किल कार्य था। सुविधा की दृष्टि से समस्त जनसंख्या से कुछ को न्यादर्श हेतु चुना गया। न्यादर्श का चयन करते समय यह ध्यान रखा गया कि चयनित न्यादर्श समस्त जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करें। इसके लिए पहले लखनऊ जिले के गैर सरकारी (ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र) प्राथमिक विद्यालयों का तत्पश्चात् विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों का चयन किया गया।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय–विधियाँ– इस शोध के अन्तर्गत निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया।

मध्यमान – गैर सरकारी (ग्रामीण एवं शहरी) प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन के माध्य स्तर को ज्ञात करने के लिए प्राप्तांकों के मध्यमान ज्ञात किये गये।

मध्यमान ज्ञात करने के लिए सूत्र –

$$\text{मध्यमान } M = \frac{\sum x}{N}$$

मानक विचलन – शिक्षकों की वैयक्तिक विभिन्नता तथा t परीक्षण की गणना के लिए सभी प्राप्तांकों का मानक विचलन ज्ञात किया गया है।

मानक विचलन ज्ञात करने के लिए सूत्र –

मानक विचलन SD =√ Σ(x- M) 2/ N

t परीक्षण या अनुपात – इसके द्वारा दो माध्यों के बीच के अन्तर की सार्थकता की जाँच करने के लिए प्रयोग किया जाता है। t परीक्षण ज्ञात करने के लिए सूत्र –

t = √ x1 - x2/σD

I J A M S R
International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

तालिका

चुने गये प्राथमिक विद्यालयों एवं अध्यापकों की संख्या–तालिका में प्रस्तुत ह`–

गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालय ग्रामीण एवं षहरी क्षेत्र

क्र.सं.	विद्यालय का नाम	न्यादर्ष शिक्षकों की सं0
1	आर0डी0 पब्लिक स्कूल बन्थरा	4
2	एस0आर0 मेमोरियल ज्ञात निकेतन, बन्थरा	4
3	ए0पी0ए0 पब्लिक स्कूल, बन्थरा	4
4	सरस्वती ज्ञान विद्या मन्दिर, मोहनलालगंज	4
5	कमल दिल्ली पब्लिक स्कूल, नरायनपुर	4
6	आजाद पब्लिक स्कूल, पिपरसण्ड	4
7	आदर्श पटेल इण्टर कालेज, हरौनी	4
8	लखनऊ मॉडल पल्लिक इण्टर कालेज,	4
9	आश्रम एकेडमी स्कूल, बी0के0टी 01	4
10	मास्टर पब्लिक स्कूल, बी0के0टी	4
11	लखनऊ पब्लिक एकेडमी, बी0के0टी	4
12	दी सिटी स्कूल, बी0के0टी	4
13	प्रभात शिक्षण संस्थान, पिपरसण्ड	4
14	पायनियर प्राथमिक स्कूल, पी0जी0आई0	4
15	गांधी बापू माण्टेसरी स्कूल, चौक	4
16	जी0एस0 कान्वेन्ट स्कूल, नटकुर	4
17	अवध कॉलिजिएट, दरोगाखेड़ा	4
18	आदर्श पटेल इण्टर कालेज, हरौनी	4
19	कमल दिल्ली पब्लिक स्कूल, नरायनपुर	4
20	आजाद पब्लिक स्कूल, पिपरसण्ड	4

21	नवयुग रेडियन्स, राजेन्द्र नगर	4
22	जवाहर लाल इण्टर कालेज, गोमतीनगर	4
23	भारत एकेडमी पब्लिक स्कूल, आलमबाग	4
24	लखनऊ मॉडल पब्लिक स्कूल, रकाबगंज	4
25	इण्डियन पब्लिक इ0का0 पूरननगर, आलमबाग	4

परिकल्पना – 1

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका – 1

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की विवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन संबंधी परिणाम।

समूह	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	*t*	सर्थकता
ग्रामीण विवाहित	100	519.6	62.4	*0.99	0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थक
षहरी विवाहित	100	530.6	51.44		

*0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थक

तलिका–1 से स्पष्ट है कि ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों की विवाहित महिला शिक्षकों का मध्यमान 519.6, शहरी प्राथमिक विद्यालयों की विवाहित महिला शिक्षकों के मध्यमान 530.6 से 11 कम है।

अतः सार्थकता के लिए निकाले गये *t* अनुपात का मान *0.99 है, जो 0.05 विश्वास के स्तर पर प्राप्त मान 1.97 से कम है।

अतः इन दोनों समूहों के मध्यमानों मे सार्थक अन्तर नहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों की विवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। (df 200 =1.97) ग्रामीण विवाहित महिला शिक्षकों में शहरी विवाहित महिला शिक्षकों की अपेक्षा समायोजन की क्षमता कम होती है। शहरी विवाहित महिलायें घर एवं बाहर के कामों में समायोजन आसानी से कर लेती हैं।

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

ग्राफ. 1

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की विवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन संबंधी परिणाम।

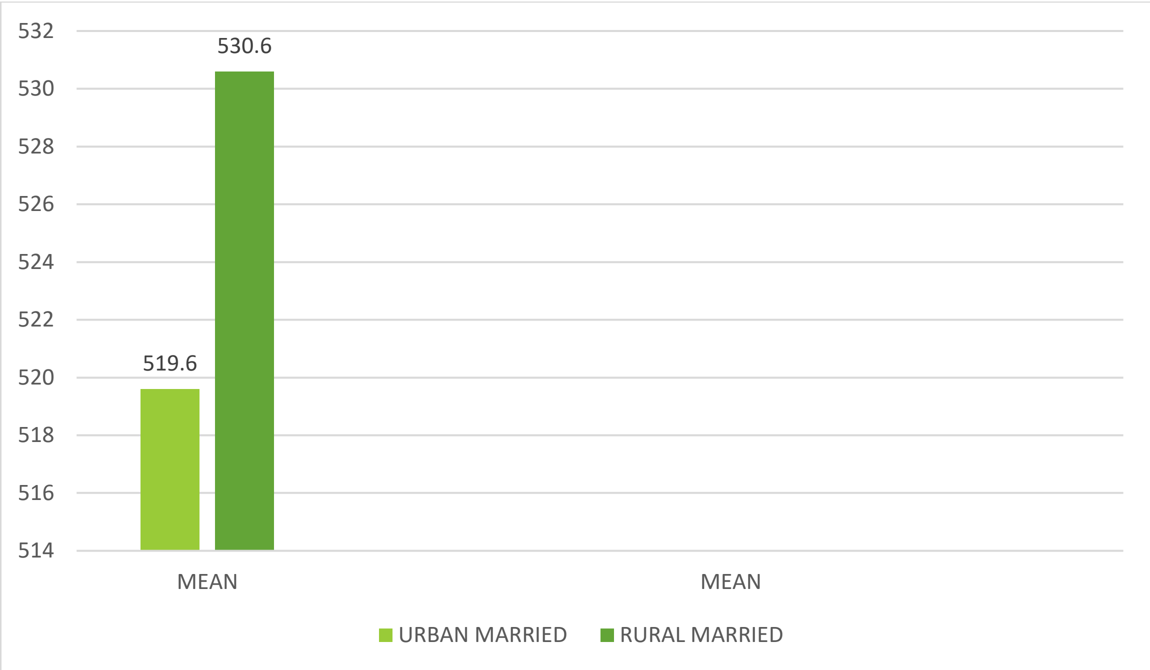

तालिका – 2

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की अविवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन संबंधी परिणाम।

समूह	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	t	सार्थकता
ग्रामीण अविवाहित	100	516.9	75.7	*0.42	0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थक
षहरी अविवाहित	100	525.6	55		

*0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थक

तालिका–2 से स्पष्ट है कि ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों की अविवाहित महिला शिक्षकों का मध्यमान 516.9, शहरी प्राथमिक विद्यालयों की अविवाहित महिला शिक्षकों के मध्यमान 525.6 से 8.7 कम है।

अतः सार्थकता के लिए निकाले गये t अनुपात का मान *0.42 है, जो 0.05 विश्वास के स्तर पर प्राप्त मान 1.97 से कम है।

अतः इन दोनों समूहों के मध्यमानों मे सार्थक अन्तर नहीं है।

Vol 9, Issue 7, 2026 **Impact Factor: 8.535** DOI: https://doi.org/10.31426/ijamsr.2026.9.7.9518

IJAMSR

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों की अविवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। (df 200 =1.97) ग्रामीण अविवाहित महिला शिक्षकों को अपने कार्यस्थल में समायोजन करने में शहरी अविवाहित महिला शिक्षकों की अपेक्षा थोड़ी समस्या होती है। क्योंकि दोनों के पारिवारिक माहौल में काफी अन्तर होता है।

ग्राफ. 2.

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की अविवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन संबंधी परिणाम।

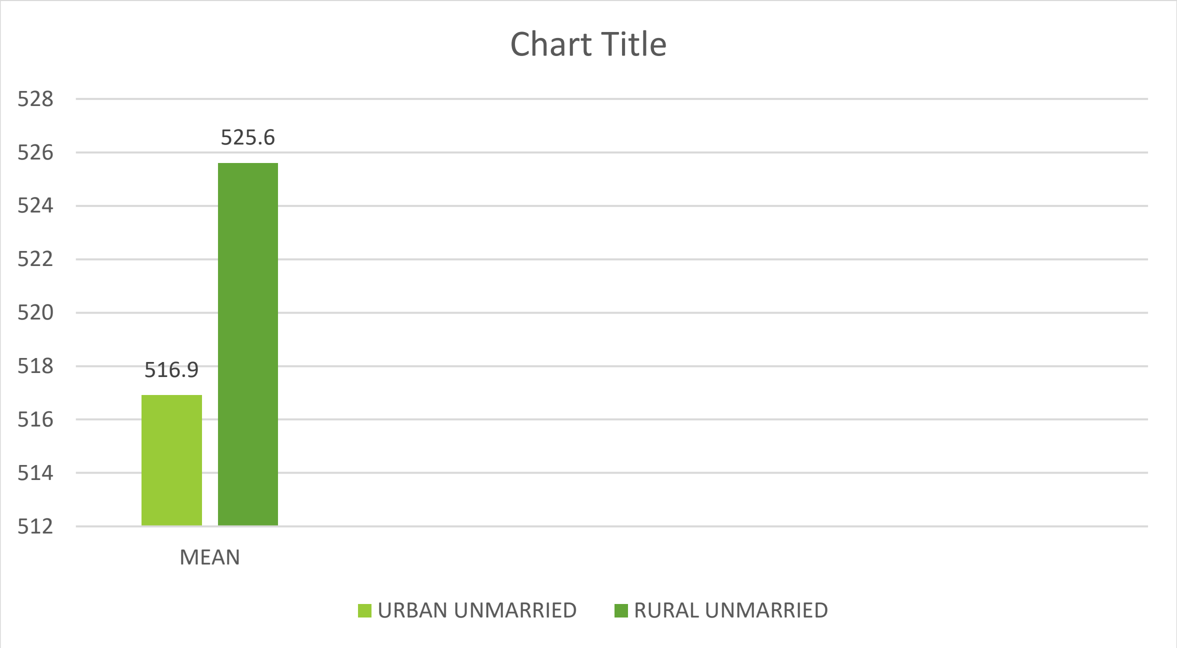

विभिन्न चरो के वितरण की व्याख्या

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की विवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन प्राप्तांकों के वितरण की व्याख्या।

तालिका.1 से स्पष्ट है कि ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों की विवाहित महिला शिक्षकों का मध्यमान 519.6, शहरी प्राथमिक विद्यालयों की विवाहित महिला शिक्षकों के मध्यमान 530.6 से 11 कम है।

जहाँ सार्थकता के लिए निकाले गये t का मान 0.99 है, जो 0.05 विश्वास के स्तर पर प्राप्त मान 1.97 से कम है। इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों की विवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। परिणामों से स्पष्ट होता है कि लखनऊ जिले के प्राथमिक विद्यालयों की विवाहित महिला शिक्षकों का समायोजन स्तर अविवाहित महिला शिक्षकों के लगभग समान है। इसकी पुष्टि विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन स्तर के माध्यों के सन्दर्भ में निकाले गये t के मान से होता है। जिसका मान 0.26 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक नही पाया गया।

IJAMSR
International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की अविवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन प्राप्तांकों के वितरण की व्याख्या।

तालिका.2 से स्पष्ट है कि ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों की अविवाहित महिला शिक्षकों का मध्यमान 516.9, शहरी प्राथमिक विद्यालयों की अविवाहित महिला शिक्षकों के मध्यमान 525.6 से 8.7 कम है। जहाँ सार्थकता के लिए निकाले गये t का मान 0.42 है, जो 0.05 विश्वास के स्तर पर प्राप्त मान 1.97 से कम है। इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों की अविवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। परिणामों से स्पष्ट होता है कि लखनऊ जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की विवाहित महिला शिक्षकों का समायोजन स्तर लगभग समान है। इसकी पुष्टि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की विवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन स्तर के माध्यों के सन्दर्भ में निकाले गये t के मान से होता है। जिसका मान 0.99 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक पाया नही गया।

निष्कर्ष –

1. परिणामों से स्पष्ट होता है कि लखनऊ जिले के प्राथमिक विद्यालयों की विवाहित महिला शिक्षकों का समायोजन स्तर अविवाहित महिला शिक्षकों के लगभग समान है।इसकी पुष्टि विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन स्तर के माध्यों के सन्दर्भ में निकाले गये t के मान से होता है। जिसका मान 0.26 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक पाया नही गया।
2. परिणामों से स्पष्ट होता है कि लखनऊ जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की विवाहित महिला शिक्षकों का समायोजन स्तर लगभग समान है। इसकी पुष्टि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की विवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन स्तर के माध्यों के सन्दर्भ में निकाले गये t के मान से होता है। जिसका मान 0.99 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक पाया नही गया।
3. परिणामों से स्पष्ट होता है कि लखनऊ जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की अविवाहित महिला शिक्षकों का समायोजन स्तर लगभग समान है। इसकी पुष्टि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की अविवाहित महिला शिक्षकों के समायोजन स्तर के माध्यों के सन्दर्भ में निकाले गये t के मान से होता है। जिसका मान 0.42 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया।

सुझाव –

1. इस अध्ययन में षिक्षकों का अपने षिक्षण स्थल से समायोजन न कर पाने की समस्या के कारणों पर और अधिक गहन अध्ययन की आवष्यकता है।
2. इस अध्ययन में समायोजन से सम्बन्धित केवल महिला षिक्षकों को ही लिया गया है। अध्ययन को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए महिला षिक्षकों की तुलना पुरूष षिक्षकों से की जा सकती है।

I J A M S R

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

3. अध्यापको के शिक्षण व्यवहार पर अध्ययन समायोजन क्षमता के साथ व्यक्तित्व पर किया जा सकता है।
4. प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के पर्यावरण का उनके अध्यापकों के समायोजन क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्रवाल, जी0 के0 (2012), समाजशास्त्र, एस0बी0पी0डी0 पब्लिसिंग हाउस, आगरा ।
- अल्वर्ट लुईस(1975)–"एजुकेषन एण्ड एडजस्टमेंट" इन्नलवुड क्लीवल्स एन जे. प्रिन्टिस हॉल।
- ओझा राजकुमार(1986)– औद्योगिक मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
- अग्रवाल रामनारायण (1970)– बाल मनोविज्ञान विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- अग्रवाल, रामनारायण (1974)– बाल मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- एन.सी.आर.टी.(2005)– राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा।
- एन.सी.ई.आर.टी. – प्राथमिक षिक्षक, नई दिल्ली द्वारा प्रकाषित त्रैमासिक जर्नल्स।
- एन.सी.ई.आर.टी.– आधुनिक भारतीय षिक्षा, नई दिल्ली द्वारा प्रकाषित त्रैमासिक जर्नल्स।
- एस.सी.ई.आर.टी.(2007–2008)– सर्वषिक्षा अभियान प्रगति रिपोर्ट।
- एस.सी.ई.आर.टी.(2012–2013)– सर्वषिक्षा अभियान प्रगति रिपोर्ट।
- कुमार, अखिलेष (2002)–"पूर्वी उत्तर प्रदेष के राजकीय एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट स्तर के विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि, उपलब्ध षैक्षिक सुविधाओं एवं अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि के संदर्भ में तुलना।
- कुमारी, मिथिलेष (1975)–"छात्राध्यापिकाओं की षिक्षण कुषलता पर समायोजन एवं चिन्ता के प्रभाव का अध्ययन" लघुषोध प्रबन्ध आगरा वि.वि आगरा। ओझा राजकुमार(1986)– औद्योगिक मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर।
- कपिल, डॉ0 एच0के0, (2004) : अनुसंधान विधियाँ, भार्गव भवन, 4/230, कचहरी घाट, आगरा–2
- किन्टो सपाल (1977)–" एडजस्टमेटं ऑन स्टूडेन्ट्स" बर्जिनिया युनिर्वसिटी।
- कुमार के. (1977)–" एडजस्टमेंट प्राब्लम्स ऑफ प्यूपिल्स सेकेण्ड्री स्कूल षिक्षा–विभाग, आगरा यूनि. फर्स्ट सर्वे इन एजुकेषन।